वीरचरितावली, २ रा चरित।

परशुराम

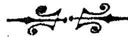
साम्यवाद-प्रतिपादक सचित्र पौराणिक उपाख्यान।



"क्षत्रिय रुधिरमये जगदपगत पापम्,
स्नपयसि पयसि शमित भव-तापम्!
केशव धृत भृगुपति रूप
जय जगदीश हरे !!"
—गीत गोविन्द।

लेखक—

पण्डित नरोत्तम व्यास।



प्रकाशक—

निहालचन्द एण्ड कम्पनी।

१, नारायणप्रसाद बाबू लेन, कलकत्ता।

पौष शुक्ला ८
सम्वत १९७९





मूल्य सादी ३)
रेशमी जिल्द ३।।।)